शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की
मासिक पत्रिका

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-७

माह : जनवरी २०२१

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

Happy Republic Day

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-७

माह- जनवरी २०२१

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा

सह सम्पादक
डॉ0 अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

सर्वप्रथम तो मैं भारत देश के अधिकांश शिक्षक जो इस मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े हुए हैं, आदरणीय अधिकारीगणों तथा जितने भी शिक्षार्थी इस मिशन का हिस्सा हैं ,उन सभी को अपना स्नेहिल अभिवादन प्रेषित करती हूं। यह बेहद हार्दिक आह्लाद का विषय है कि "मिशन शिक्षण संवाद" प्रत्येक वर्ष की भांति अपनी पत्रिका का संपादन कर रहा है। एक ऐसी शिक्षकोपयोगी पत्रिका, जिसके प्रत्येक पृष्ठ में शिक्षकों की कटिबद्धता,लगन और मेहनत देखते ही बनती है। हालांकि मिशन शिक्षण संवाद से जुड़े हुए मेरा निजी अनुभव अभी बहुत ही कम समय का है।

दोस्तों, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार वर्ष –2020 में सम्मानित होने के बाद "वाराणसी कार्यशाला" में मुझे पहली बार मिशन शिक्षण संवाद से जुड़ने का अवसर मिला और तब से लेकर अब तक जो मेरा अनुभव है, वह वाकई अकथनीय और अनिर्वचनीय सुख की भांति है।

मैं वाराणसी कार्यशाला से लेकर अब तक मिशन के कई कार्यक्रमों को

देखती रहती हूं और स्वयं भी "सफलता से संवाद" कार्यक्रम के तहत, राष्ट्रीय स्तर के शिक्षकों के लाइव साक्षात्कार करने का हिस्सा रही हूं तो मैंने यह पाया कि इस समूह के सदस्यों के अंदर एक स्वप्रेरित जिम्मेदारी का एहसास है। जिसके तहत वह किसी भी कार्य को समयानुसार और बेहतर टीम वर्क के साथ पूर्ण करते हैं।

मिशन का उद्देश्य मानवता का कल्याण भी है जो इनके सामाजिक सरोकार के कार्यों यथा प्रकृति मित्र तथा बालिका शिक्षा आदि के माध्यम से भलीभांति परिलक्षित होता है। मेरे लिए यह प्रसन्नता का अनुभव और गर्व की अनुभूति है कि राष्ट्रीय पटल पर पहुंचने के बाद मैं एक ऐसे नैतिक मूल्यों पर आधारित ऊर्जावान शिक्षकों के समूह की सदस्या हूं।

वर्तमान परिदृश्य में जहां उत्तरोत्तर नैतिक समाज का पतन होता जा रहा है एवं श्रेय लेने की होड़ मची हुई है, ऐसे समय में मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रगतिशील व प्रयोगशील शिक्षा की उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है।

जो निस्संदेह प्रशंसनीय है। यह समूह न केवल श्रेय देने की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है वरन् गुणवत्ता और संवाद दोनों के मध्य सामंजस्य स्थापित कर रहा है।

कई बार यह होता है कि हम संवाद तो कर लेते हैं लेकिन उसको फलीभूत नहीं कर पाते और कई बार हम क्वॉलिटी मेंटेन करते हैं लेकिन सभी को संतुष्ट नहीं कर पाते।

मिशन शिक्षण संवाद की खूबी यह है कि यह न केवल सभी को साथ आगे लेकर चल रहा है, बल्कि प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रत्येक बार कुछ नए चैलेंजेस, कुछ नए टारगेट्स और कुछ नवीनतम संसाधनों के प्रयोग द्वारा स्वयं से भी आगे आता दिखाई पड़ रहा है। मिशन शिक्षण संवाद का "बेहतर से बेहतरीन" होता जा रहा स्वरूप अकस्मात ही प्रभावित करने वाला है। स्वयं से ही आगे निकलने का जुनून इसकी वजह है क्योंकि जहां समाज हर समय शिक्षक को इस समय नीचा दिखाने और उसकी क़ाबिलियत पर दोराय रखने का आ गया है, वहां मिशन शिक्षण संवाद ने प्रयोगधर्मिता व एकजुटता प्रदर्शित करते हुए शिक्षक के खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त करने में सहयोग किया है ।

न सिर्फ इतना ही बल्कि नवीनतम तकनीकों, आनलाइन शिक्षण प्रणाली के आधार पर ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच में अपनी पहुंच भी बनाई है। मैं बेहद संतुष्ट एवं प्रसन्न हूं कि मिशन शिक्षण संवाद बिना थके, बिना रुके शैक्षिक स्तर पर नौनिहालों का भविष्य संवार रहा है। उम्मीद करती हूं कि एक दिन ऐसा भी आएगा कि जब पूरे देश में सभी शिक्षालयों के शिक्षकों और शिक्षार्थियों के हृदय में "मिशन शिक्षण संवाद" के जगमगाते

दीप की लौ जल रही होगी ।

आप सभी से साझा करना चाहूंगी कि राष्ट्रीय स्तर पर बेसिक शिक्षा का प्रतिनिधित्व करने के बाद उत्तर प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी योजना "मिशनशक्ति" की "पोस्टर वुमन" के तौर पर समस्त जनपदों में इस योजना का प्रमुख भाग होना मेरे लिए दोहरी खुशी का प्रतीक था एवं उसी समय में ही मिशन से जुड़ना अपने आप में अनूठा अनुभव था।

मिशन शक्ति की उत्तर प्रदेश की शिक्षा विभाग से एकमात्र पोस्टर वूमन होने के नाते मैं चाहूंगी कि घरेलू महिलाओं और ड्रापआउट बालिकाओं की शिक्षा के लिए कुछ नए आयाम स्थापित किए जाएं, उन्हें भी शिक्षा की मुख्यधारा अथवा वोकेशनल ट्रेनिंग्स के द्वारा शिक्षा से जोड़ा जाए। जिन बालिकाओं को विद्यालय आने में संकोच हो रहा है या जिनका विवाह हो गया है हम उन्हें भी शिक्षित करते चलें और उनके स्वास्थ्य एवं समृद्धि हेतु नवाचारी प्रयास करें ।

मेरी कोशिश है कि यथासंभव मैं मिशन से जुड़ी रहूं, शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मनुष्यता का कल्याण जैसे लक्ष्य को हमेशा साधते हुए आगे बढ़ते रहना चाहती हूं। इस स्तर पर पहुंचने के बाद जिम्मेदारियां और बढ़ गई हैं, अपने सम्यक एवं सम्माननीय शिक्षिका भगिनियों एवं शिक्षक बंधुओं से अनुरोध करूंगी कि आप सभी निरंतर और परस्पर प्रेरित करते रहें। मिशन शिक्षण संवाद की छवि को दैदीप्यमान करने में सहयोगी बनें। कुछ ना चाहने की प्रवृत्ति और स्वप्रसिद्धि की लालसा ना पालकर बस बढ़ते ही जायें। हम सभी एक दूसरे से सीखते–सिखाते हुये अपनी शिक्षणयात्रा को रोचक और मनोरम बनाते चलें। मिशन शिक्षण संवाद की यह पत्रिका शिक्षक के "अथक शैक्षणिक प्रयासों का सशक्त हस्ताक्षर" साबित हो। इसके आगामी अंक के लिए मेरी अनंत स्नेहिल शुभकामनाएं तथा सभी शिक्षक सितारों को उनके स्वर्णिम उज्जवलतम भविष्य की मंगलकामनाएं!

सुश्री स्नेहिल पाण्डेय
राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार –2020
प्राथमिक विद्यालय सोहरामऊ, मॉडल स्कूल ,नवाबगंज ,
जनपद–उन्नाव
उत्तर प्रदेश
राष्ट्रीय शिक्षा नीति संचालन समिति–2020–सलाहकार सदस्य
पोस्टर वुमन –"मिशनशक्ति" उत्तर प्रदेश सरकार

सम्पादकीय

शिक्षा एक ऐसा व्यापक शब्द है जिसका महत्व प्रकृति के प्रत्येक प्राणी में होता है। इसीलिए प्रकृति का प्रत्येक प्राणी शिक्षा प्राप्त करता है अथवा करना चाहता है। फिर चाहे वह परिवेश से शिक्षा प्राप्त करे, परिवार से शिक्षा प्राप्त करे, समाज से शिक्षा प्राप्त करे अथवा किसी शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करे। इसका मतलब यह हुआ कि प्रकृति में शिक्षा परिवेश, परिवार, समाज और शिक्षक से प्राप्त की जा सकती है। जब शिक्षा प्राप्त करने के एक से अधिक विकल्प हैं फिर हम मनुष्यों में शिक्षा प्राप्त करने के लिए शिक्षक को ही सबसे महत्वपूर्ण माध्यम क्यों माना जाता है? क्या एक शिक्षक किसी बालक को सम्पूर्ण शिक्षित करने में सफल हो सकता है? यदि नहीं तो मानवीय शिक्षा में शिक्षक ही सबसे महत्वपूर्ण क्यों है? यदि हाँ तो कैसे और कौन शिक्षक?

ऐसे ही अनेकों प्रश्नों के समाधान के लिए जरूरी होता है संवाद। जब बात शिक्षा की हो तो शिक्षक और शिक्षण के बिना संवाद अधूरा होगा। इसीलिए हमने सभी शिक्षकों द्वारा शिक्षण पर संवाद शुरू किया गया। जिसका नाम है शिक्षण संवाद जिसका एक अंश आप सभी के सामने ''शिक्षण संवाद'' मासिक पत्रिका के रूप में प्रस्तुत है। जहाँ आपको परिवेश, परिवार, समाज, शिक्षक और शिक्षा के आपसी सहयोग, समन्वय और सामन्जस्य पर सतत संवाद होता है। आप सभी पाठक गण पत्रिका को पढ़ें, सीखें–सिखाएँ और अपने विचारों को लिखकर भेजें तथा नववर्ष 2021 की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ ''शिक्षण संवाद'' बढाएँ।।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल बाल रत्न	3
विचारशक्ति–1	4
विचारशक्ति–2	5
निन्दक नियरे राखिये	7
बात महिला षिक्षकों की	8
बाल कविता–1	9
बाल कविता–2	10
टी.एल.एम.संसार	11–13
English Medium Diary	14
प्रेरक प्रसंग–1	15
बाल कहानी	16
बाल फिल्म	17–19
खेल विशेष	20–22
योग विशेष	23–24
षिक्षण तकनीक	25
सदविचार	26–27
नवाचार	28–29
गतिविधि	30

मिशन गीत

बेसिक ही बदल जाए।

मिशन के सपनों को, हम सब जो समझ जाएँ,
सब मिलके करें कोशिश, बेसिक ही बदल जाए।

शिक्षा का उच्च स्तर हो, कक्षा भी सुसज्जित हो।
विद्यालय भी हो आकर्षक, शुरुआत सँवर जाए।
मिशन के सपनों को, हम सब जो समझ जाएँ।
सब मिलके करें कोशिश, बेसिक ही बदल जाए।

शिक्षक जो करे कोशिश, बदलाव नजर आए।
सब छात्र पढ़ें और बढ़ें, गुणवत्ता निखर जाए।
मिशन के सपनों को, हम सब जो समझ जाएँ।
सब मिलके करें कोशिश, बेसिक ही बदल जाए।

अभिभावक जागरूक हो, छात्रों में असर आए।
नवाचार से शिक्षित हो, सब नियमित हो जाएँ।
मिशन के सपनों को, हम सब जो समझ जाएँ।
सब मिलके करें कोशिश, बेसिक ही बदल जाए।

शिक्षक की गरिमा पे, कोई आँच न अब आए।
हर संभव कोशिश हो, तो मिसाल ही बन जाए।
मिशन के सपनों को, हम सब जो समझ जाएँ।
सब मिलके करें कोशिश, बेसिक ही बदल जाए।

हम अकेले ही करें शुरुआत, एक कारवां बन जाए।
साक्षरता हो शत प्रतिशत, एक दास्तां बन जाए।
मिशन के सपनों को, हम सब जो समझ जाएँ।
सब मिलके करें कोशिश, बेसिक ही बदल जाए।

अर्चना यादव,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय परसू सहार,
विकास खण्ड–सहार,
जनपद–औरैया।

बेसिक शिक्षा
के
अनमोल रतन

अनमोल बाल रत्न

मैं रेनू शर्मा प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर लोनी में कक्षा 5 की अध्यापिका हूँ। अभी हाल ही में 17 मार्च 2021 को मेरी कक्षा के बालक को प्रेरक बालक के रूप में जिला गाजियाबाद से चयन किया गया है। बालक का नाम धर्मराज है जिसके पापा मिस्त्री का काम करते हैं और माता जी घर का काम सँभालती हैं। बालक का सम्मान पत्र लोनी के खंड शिक्षा अधिकारी श्री पवन कुमार भाटी एवं लोनी के माननीय विधायक के द्वारा मिला तब मुझे बहुत ही खुशी हुई और धर्मराज अन्य बच्चों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया उसकी खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहा।

रेनू शर्मा,
प्रधानाध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय इलाइचीपुर,
विकास खण्ड–लोनी,
जनपद–गाजियाबाद।

शिक्षक

शिक्षक शब्द सुनते ही सभी के मन में अलग अलग विचार आते होंगे परन्तु असल मायनों में तो ''शिक्षक'' किसी भी समाज की वह नींव है जिसके बिना ''शिक्षा'' शब्द अधूरा है। शिक्षक शब्द से हमारे मन में हमेशा सम्मान की भावना आती है एक आदर्श शिक्षक की पहचान भी ऐसी ही होनी चाहिए। जिस प्रकार हमारी प्रथम शिक्षिका ''माँ'' को हम सम्मान देते हैं ठीक वैसे ही सम्मान के पात्र हमारे शिक्षक भी होते हैं।

एक राष्ट्र निर्माता के रूप में शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं नन्हें–नन्हें हाथों को कलम की ताकत बताते हैं। छोटे–छोटे बच्चों को विभिन्न प्रकार की अठखेलियों से पढ़ाते हैं कभी–कभी तो पढ़ाई को रुचिकर बनाने के लिए स्वयं ही बच्चे बन जाते.... और भी ना जाने किन– किन प्रयोगों का उपयोग करके बच्चों को स्कूलों में सहज करते हैं जिससे बच्चा विद्यालय आने में रूचि दिखाता है।

शिक्षक की जिम्मेदारी प्रत्येक बच्चे के साथ अलग – अलग होती है जैसा कि मनोविज्ञान में बताया गया है कि प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है तो समझिए प्रत्येक बच्चे के लिए एक शिक्षक प्रतिदिन कितनी मेहनत और लगन से अपने शिक्षण कार्यों को अंजाम देते होंगे।

पुरातनकाल में माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त कराने के लिए गुरूकुल में छोड़ दिया करते थे सिर्फ एक विश्वास के सहारे जो अभिभावकों व शिक्षकों के बीच होता था। ऐसा ही विश्वास आज के अध्यापकों के ऊपर करना जरूरी है।

आज शिक्षकों की भूमिका पर तरह–तरह के प्रश्न उठते हैं लेकिन शिक्षक का कार्य सिर्फ वेतन लेना ही नहीं है। इसके विपरीत शिक्षक के द्वारा किये गए कार्यों से पूरे देश का विकास व कल्याण होता है एक शिक्षक समाज का राष्ट्र निर्माता होने के साथ–साथ समाज की रीढ़ की हड्डी भी है। जिस प्रकार मनुष्य का शरीर रीढ़ की हड्डी बिना व्यर्थ होता है उसी प्रकार देश का विकास भी शिक्षक और शिक्षा के बिना व्यर्थ होता है। एक शिक्षक की भूमिका एक कुम्हार के तरह होती है। वह मिट्टी रूपी विद्यार्थी को लेकर विभिन्न प्रकार के ढाँचों में संजोकर भाँति– भाँति के आकारों में ढाल देते हैं।

निष्कर्ष के रूप में हमें शिक्षकों के साथ हमेशा सम्मान भाव से पेश आना चाहिए हमारे भारत में शिक्षकों को भगवान व अभिभावकों से भी ऊँचा दर्जा दिया गया है इसलिए हमें सिर्फ शिक्षक दिवस पर ही नहीं अपितु हर दिन शिक्षक का सम्मान करना चाहिए।

शिप्रा सिंह
सहायक अध्यापक, उच्च प्राथमिक विद्यालय रूसिया,
विकास खण्ड–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

विचारशक्ति–2

बच्चों के लिए काफी कठिन है कोरोना काल

शिक्षण संवाद

इस समय पूरा देश कोरोना महामारी से जूझ रहा है ज्यादातर राज्यों में लॉकडाउन जैसी स्थिति है या लॉकडाउन लग चुका है। वहीं सी बी एस ई बोर्ड के स्कूल में समर वेकेशन की छुट्टियाँ कर दी गईं है। इसलिये यह समय छोटे बच्चों के लिए ज्यादा महत्वपूर्ण है। बड़े लोग मोबाइल के जरिये अपने दोस्तों से बात कर लेते हैं या फेसबुक और व्हाट्सएप के जरिये सोशल मीडिया पर अच्छा खासा समय बिताकर स्वयं को कोरोना भय और एकांत से मुक्त कर लेते हैं परंतु छोटे बच्चे न तो अपने दोस्तों से ही बात कर पा रहे हैं और न ही वह घर के बड़ों के साथ समय बिता पा रहे हैं

गत वर्ष भी महीनों तक लॉकडाउन लगा रहा बच्चों के स्कूल लगभग बंद ही रहे। कक्षा 9–12 के छात्रों को कुछ समय के लिए स्कूल जाने का मौका मिला भी पर प्राइमरी कक्षाओं के छात्र घर पर ही अध्ययनरत रहे। शहरी क्षेत्रों के निजी विद्यालयों के छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से कक्षाएँ पढ़ाये जाने के प्रयोग किये गए जिससे बच्चों को कई घंटों तक मोबाइल स्क्रीन पर आँखें गड़ाए रखना पड़ा और उसके दुष्परिणाम भी सामने आए। सुबह से दोपहर तक चली क्लास के बाद ढेर सारा होमवर्क करके उनकी फोटोग्राफ विद्यालयों के व्हाट्सएप समूह पर अपलोड करने की बाध्यता से जूझते बच्चों का बचपन कहीं खो सा गया। बच्चे

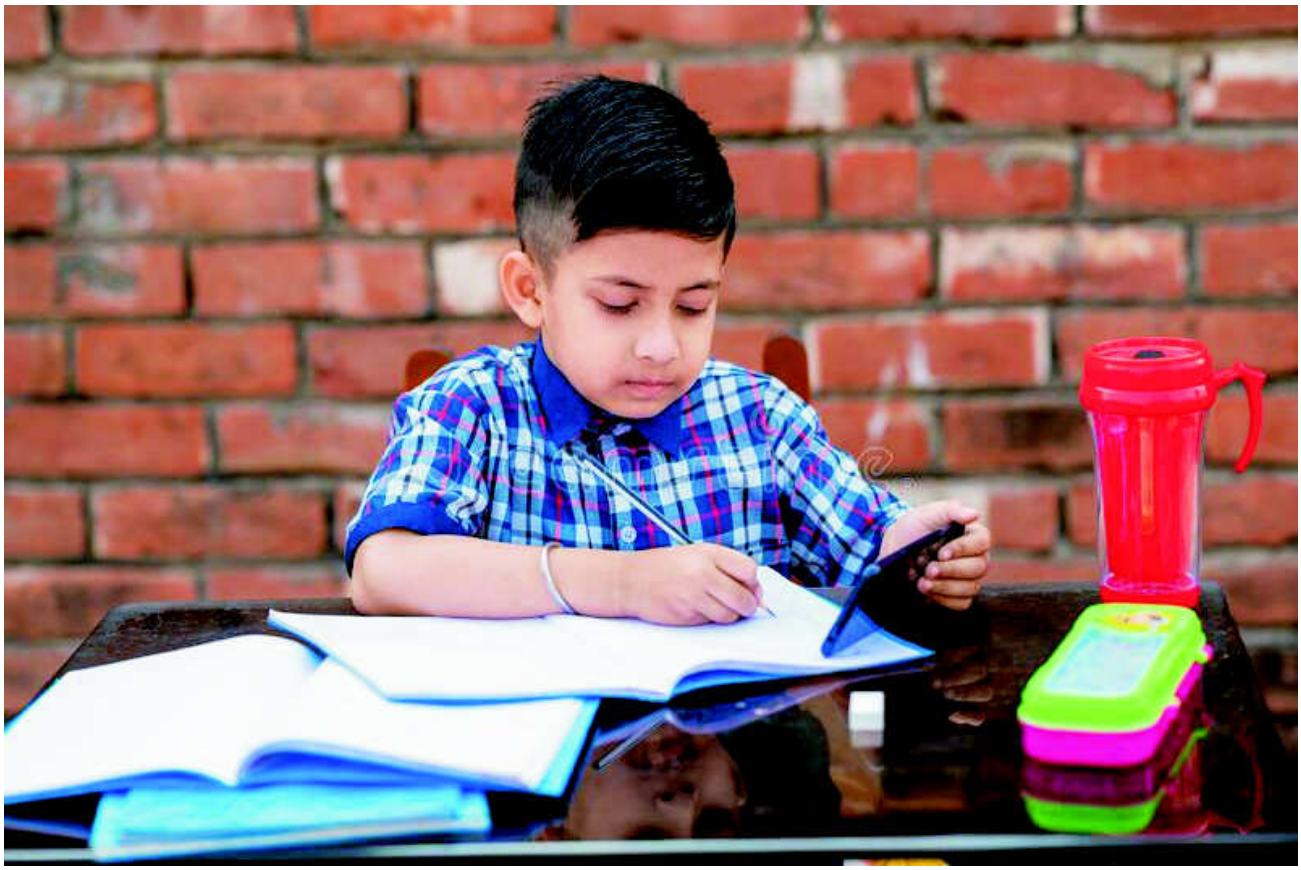

भावात्मक रूप से काफी संवेदनशील होते हैं ऐसे में पूरे दिन ऑनलाइन पढ़ाई में बच्चों को अपने हमउम्र साथियों के बीच अपनी बात करने का अवसर बिल्कुल नहीं मिला जिसके कारण वह अत्यंत चिड़चिड़े या गुमसुम होने लगे हैं। पिछले वर्ष लॉकडाउन के दौरान शहरी क्षेत्र के जागरूक अभिभावकों ने अपने बच्चों को कोरोना संक्रमण से बचाये रखने के लिए ज्यादातर घरों की बाउंडरी के बीच कैद कर दिया था। फिजिकल मूवमेंट लगभग खत्म होने से बच्चों का न सिर्फ वजन बढ़ने लगा है बल्कि उनके मेटाबोलिज्म पर भी नकारात्मक असर देखने को मिला है। किशोरावस्था में बच्चों का फिजिकल रूप से एक्टिव रहना काफी जरूरी होता है क्योंकि यह उनके लंबाई बढ़ने की उम्र होती है परंतु इस काल मे बाहर निकलकर सामूहिक खेलकूद के अवसर न मिलने और टी बी पर दिन भर चिपके रहने से उनका शारीरिक विकास प्रभावित हुआ है।

कोरोना काल मे ज्यादातर घरों में कोरोना से सम्बंधित बातें साझा होती हैं निकटस्थ रिश्तेदारों के कोरोना से ग्रसित होने, किसी रिश्तेदार के कोरोना से आकस्मिक निधन की खबर, न्यूज चैनल पर कोरोना के आँकड़े और दिखाई जा रहीं लाशों से बच्चों के बालमन काफी आहत हो रहे हैं। घर की बाउंडरी से सड़क निहारती खौफजदा आँखों से बच्चों के अंतर्मन की बात सहज रूप जान पाना अभिभावकों के लिए आसान नहीं है। बच्चे इस समय बड़ों से अधिक भयग्रस्त और परेशान हैं। इस बात को समझना अब आवश्यक हो गया है। कोरोना का असर बच्चों के बालमन पर न पड़े इसकी चिंता सभी अभिभावकों को करनी होगी। बच्चों के लिए उनकी दिनचर्या कैसी हो इस पर भी चिंता करनी होगी। सी बी एस ई के विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश हो गए हैं ऐसे में कोरोना के भय के बीच दिन भर घर में रहने वाले बच्चे एक्टिव कैसे रहें इसके लिए माता–पिता को उनके साथ थोड़ा समय बिताकर उनसे बातचीत करके उन्हें कुछ गतिविधियों में एक्टिव रखना होगा। परिवार के बड़ों को लूडो कैरम साँप सीढ़ी जैसे इंडोर खेलों में शामिल होकर बच्चों को मानसिक अवसाद से बाहर लाना होगा, वहीं फिजिकल रूप से भी एक्टिव बने रहें इसलिए घरेलू काम भी लगाकर उन्हें एक्टिव बनाये रखा जा सकता है। घर के पुराने समान से बच्चों को क्राफ्ट के प्रोजेक्ट बनाने के लिए प्रेरित किया जा सकता है या बाजार से क्राफ्ट का समान जुटाकर बच्चों को क्राफ्ट के जरिये व्यस्त रखा जा सकता है। ध्यान रहे बच्चे कठिन समय में स्वयं को अकेला और उपेक्षित महसूस न करें। इस समय छोटे बच्चों को बार–बार डाँटने से भी परहेज रखें और उनके खान पान और इम्युनिटी का भी ख्याल रखें।

अवनीन्द्र सिंह जादौन
संयोजक मिशन शिक्षण संवाद
23–05–2021

निन्दक नियरे राखिये

शिक्षकों के बीच बढ़ता वैचारिक मतभेद

शिक्षण संवाद

कहते हैं नवजात शिशु पुष्प के समान होता है, जिसे जितना सहेजो और सँवारो वह उतना ही पल्लवित होता है। बेसिक शिक्षा विभाग में आए नवनियुक्त शिक्षक भी विभाग के लिए शिशु समान ही होते हैं। जिनमें अनेक संभावनाएँ, प्रतिभाएँ व उत्साह के साथ कार्य करने का जज्बा छिपा होता है। जरूरत होती है तो केवल उन्हें सही राह दिखाकर मार्गदर्शन की

परंतु मैं इसे विडंबना ही कहूँगी कि जब हम जैसे नवनियुक्त शिक्षक विद्यालयों में कुछ विशेष गतिविधियाँ अथवा शिक्षण कार्य करना चाहते हैं तो अक्सर यह कहकर हमारा मनोबल गिराया जाता है कि आपको पुरस्कार नहीं मिल जाएगा। अनगिनत बार तो ऐसा भी होता है कि नवनियुक्त शिक्षकों द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों की सराहना हमारे वरिष्ठ शिक्षक स्वयं लेकर बिना असहज महसूस किए स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। हालांकि इसके कुछ अपवाद भी हो सकते हैं लेकिन मेरा प्रश्न है कि ऐसा क्यों?

आखिर क्यों अपने अन्य शिक्षक भाइयों का मनोबल गिराकर उन्हीं के किए गए कार्यों दुख के द्वारा सम्मान प्राप्त करना चाहते हैं। सभी शिक्षकों में अपनी विशेष प्रतिभा और जज्बा होता है, जिसका प्रयोग सही दिशा में विद्यालय हित में किया जाए तो सम्मान पूरे विद्यालय परिवार का बढ़ेगा ही जो होना भी चाहिए। परंतु किसी अन्य के द्वारा किए गए कार्य की प्रशंसा स्वयं हँसकर प्राप्त करना गलत है, जो मर्यादाशील शिक्षक को शोभा नहीं देता। मेरा मानना है कि कहीं ऐसा करने से वह कर्तव्यशील नवनियुक्त शिक्षक भी कर्तव्यहीन ना हो जाए। कई बार हम नवनियुक्त शिक्षकों से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से यह भी कहा जाता है कि आपकी तो नौकरी अभी पाँच–छह साल की ही हुई है और आप अभी से चाहते हैं कि हमें छोड़कर लोग आपको जानें और शायद यही सोच हमारे विभाग की भी है। विभाग द्वारा दिए जाने वाले सम्मान के लिए बनाई गई सूचियाँ इस जमीनी सच्चाई को बयां करती हैं और यह सर्वविदित है कि सभी इसी गर्त में बढ़ते जा रहे हैं। हमें हमारे मानदंड बदलने चाहिए क्योंकि अनुभव के साथ युवा जोश का होना भी जरूरी है। मेरा सौभाग्य है कि मिशन शिक्षण संवाद के साथ जोड़कर मुझे भी अपने मन की बात इस लेख के जरिए साझा करने का अवसर प्राप्त हुआ।

ज्योति विश्वकर्मा,
सहायक अध्यापिका,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय जारी भाग–1,
विकास क्षेत्र –बड़ोखर खुर्द, जनपद–बाँदा।

महिला सशक्तीकरण

शिक्षण संवाद

सृष्टि की सर्जना में महिलाओं का अस्तित्व उस प्रकाश पुँज के समान है जिसने समय–समय पर पुरुषों का पथ प्रदर्शक के रूप में प्रशस्त किया है। वर्तमान समाज मे महिला सशक्तीकरण की जो कवायद चल रही है उसका मूलभूत उद्देश्य यही है कि महिलाओं का स्थान पुरुषों की तरह ही स्थापित हो ताकि समतामूलक समाज की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया जा सके। इसी क्रम में महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी अतुल्य सहभागिता प्रदान की है। कश्मीर से कन्याकुमारी ही नहीं वरन सकल विश्व में महिलाएँ सुदृढ़ रूप से सैनिक से लेकर शिक्षिका तक अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्रस्तुत कर रही हैं। पुरुषों से शारीरिक भिन्नता और शक्ति में विषमता होने पर भी कहीं भी महिलाएँ पीछे नहीं हैं। सुदूरवर्ती ग्रामीण अंचलों में महिला शिक्षिका की पदस्थापना कई समस्याओं की जननी है। जहाँ आवागमन में दुरूहता है वहीं समय से विद्यालय पहुँचने की प्रतिबद्धता दूसरी दिक्कत। एक माँ, पत्नी, बेटी जैसे किरदारों का सम्यक निर्वहन सेवा के साथ बड़ी चुनौती रहती है।

किन्तु गर्व का विषय रहता है कि आज अपने आत्मबल और समय प्रबंधन से महिला शिक्षिकाएं न केवल शैक्षणिक पक्ष में बल्कि अन्य नवाचारों से शिक्षण विधा की दशा और दिशा को परिमार्जित कर रही हैं।

डॉ0 अनुराग पाण्डेय,
सहायक अध्यापक,
संविलयन विद्यालय औरोतहरपुर,
विकास खण्ड–ककवन,
जनपद–कानपुर नगर।

बाल कविता-1

शिक्षण संवाद

जल है जीवन का आधार

समझ सको तो समझ लें जीवन का ये सार।
धरा की इस संपदा को मत करो बेकार।।
कर रही पुकार, धरा कह रही सभी से।
संरक्षण कर लो जल का, समय से।।
न समय बचेगा और न ही बचेगा जल।
निश्चित ही पछताना पडेगा, आने वाले कल।।
प्रकृति से छेड़छाड़ सदैव विनाश ही करती।
भरपाई आज के कार्य की, आने वाली पीढ़ी करती।
आने वाले कल की न सोचें, हैं लोग वे बड़े ही विचित्र।
देखना पड़ेगा वरना धरा का अकल्पनीय चित्र।
जल ही आस्था, जल ही है विश्वास।
जल से ही है जीवन की आस।
''जल शक्ति अभियान'' के बन जाओ सिपाही सच्चे।
बूँद–बूँद की कीमत को पहचानें सभी बड़े और बच्चे।

सुमन शर्मा,
सहायक अध्यापक, उच्च प्राथमिक विद्यालय गढ़ी माली,
विकास खण्ड – छाता,
जनपद– मथुरा।

Poem

One and two
Went in a zoo
Monkeys gibber and lions roar
All enjoyed with three and four
Elephants trumpet and pythons hiss
Amazed all with five and six
There was jiraff high and great
Wondered all with seven and eight
Zoo is a place full of joy and fun
We will come again said nine and ten

Vishal Kumar Rastogi,
Assistant teacher,
Primary School Munnupurwa,
Block-Sakran,District-Sitapur.

टी0एल0एम0 संसार

3d shapes

शिक्षण संवाद

कक्षा शिक्षण को प्रभावी और रुचिकर बनाने में टी एल एम की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। बच्चों का content को रुचि और समझ के साथ सीखने के लिये जरूरी है कि वे जो सीखें उसका प्रभाव उनके मस्तिष्क पर स्थायी बने। टी0 एल0 एम0 content की समझ उत्पन्न करते हैं और 100% लर्निंग आउटकम में सहायता प्रदान करते हैं। अगर बच्चे TLM से खिलौनों की तरह खेल सकें तो अधिगम संभवतः अधिक होगा।

Maths shapes की पहचान कराने और shapes का surface area पता करने के लिये 3D shapes TLM बहुत ही उपयोगी है। कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों को विभिन्न shapes जैसे त्रिभुज, चतुर्भुज और आयत आदि की पहचान में ये TLM अत्यन्त उपयोगी है तथा कक्षा 6 से 8 तक विभिन्न shapes के surface area निकलने का अभ्यास मेरे TLM 3d shapes से आसानी से कराया जा सकता है। बच्चे पेपर shape पर लगे धागे को खींच कर विभिन्न shapes को स्वयं बनते देखते हैं। खिलौनों की तरह बार–बार इस TLM का प्रयोग करते हैं और shapes की समझ विकसित करते हैं।

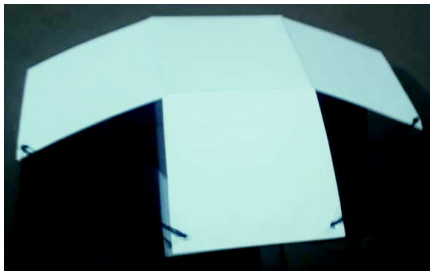

लुबना वसीम
प्रधानाध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय सिविल लाईन,
ब्लॉक एवं जनपद–फीरोजाबाद।

टी0एल0एम0 संसार

बिग-बुक "नन्हें-मुन्ने कवि"

शिक्षण संवाद

टी0एल0एम0 बनाने की विधि–

1. सर्वप्रथम मैंने एक चार्ट पेपर लेकर उसे दो बार चार्ट की लम्बाई व चौड़ाई के दोनों हिस्सों से मोड़ लिया। निकले हुए भाग को कैंची द्वारा छाँट लिया।

2. अब यही प्रक्रिया मैंने बाकि के चार्ट पेपर से की और अपनी आवश्यकतानुसार बिग–बुक के लिए कई जोड़ी पेपर प्राप्त कर लिये।

3.बिग–बुक के कवर पेज हेतु मैंने एक मोटे से चार्ट पेपर को इसी तरह काट कर बना लिया।

अब मैंने decoration सैलोटेप को बिग–बुक के पूरे कवर पेज के किनारे लगा कर सजा दिया।

4. सुई धागे की सहायता से मैंने बिग–बुक को बीच से सिल लिया।

हाईलाइटर द्वारा मोटे–मोटे अक्षरों में मैंने नन्हें–मुन्हें कवि लिख कर बिग–बुक को ऊपर से तैयार कर लिया।

5. अब मैंने अपनी बिग–बुक के भीतरी पन्नों को स्वरचित व स्वचित्रित कविताओं,पहेलियों तथा हस्त गतिविधियों से पूरी तरह सजाकर अपनी नन्हें–मुन्हें कवि नामक बिग–बुक बना कर तैयार कर ली।

नन्हें –मुन्ने कवि(बिग–बुक) का शिक्षण में महत्त्व व उपयोगिता– अलादीन का चिराग तो रगड़ने पर अपना चमत्कार दिखाता है पर मेरी ये बिग–बुक खुलते ही बच्चों के लिये मनोरंजन व आकर्षण का केंद्र बन जाती है।

इस बिग–बुक का शिक्षण में बहुत ही महत्त्व है। मेरी सारी कविताएँ सरल व मनोरंजक है। मैंने इन कविताओं को बच्चों के साथ पूरे हाव भाव से कराया है। गतिविधि के साथ की गई कवितायें बच्चों को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ भी बनाती हैं।

सुबह क्लास शुरू करने से पहले एवम् अंतिम घंटे में छुट्टी से पहले खूब अच्छी गतिविधि के साथ की गई कविता बच्चों को और अधिक ऊर्जा से भर देती है। मेरी ये हिंदी भाषा की बिग–बुक मिशन प्रेरणा के तहत हिंदी की अधिक से अधिक दक्षताओं को प्राप्त भी करती है। जैसे–H101 ग्रेड1 के स्तर की कहानियों और कविताओं का आदर्श वाचन होते हुए सुनकर समझ लेता/लेती है।

H102 रोजमर्रा के परिवेश में सुने जाने वाले सरल क्रिया शब्दों, चीजों, जानवरों के नाम बता सकता/सकती है।

H110 चार–पाँच वाक्यों के एक सरल पाठ्यांश को शुद्धता के साथ पढ़ सकता है।

H203 ईमानदारी उदारता जैसे शब्दों को अपने जवाबों में इस्तेमाल कर सकता/सकती है। इसीप्रकार H201, H203, H204, H204, H205, H210, H214, H301, H302,

H304, H305, H306, H314 ...

मेरी अधिकतर कविताएँ मनोरंजक होने के साथ–साथ बहुत अच्छी सीख भी देती हैं। जैसे– पेड़ लगाओ शुद्ध हवा और फल पाओ।

बेटी बचाओ, नारी (मम्मी, दीदी, चाची, दादी) का सम्मान करने की सीख।

देश के प्रति प्रेम, अपने तिरंगे झंडे के रंगों का ज्ञान।

कचरे को कूड़ेदान में डालने की समझ।

परमेश्वर द्वारा प्रदत्त वस्तुओं को धन्यवाद करने एवम् उनके प्रेम की समझ।

मेरी इस बिग–बुक में कुछ हस्त गतिविधियाँ भी हैं जिससे छोटे बच्चे आसान तरीके से मछली बनाना, चिड़िया बनाना तथा मोर बनाना सीख सकते हैं। बिग–बुक में सम्मिलित पहेलियों से बच्चों में सूझ–बूझ द्वारा सीखने की समझ भी बनती है।

अंततः मैं बस इतना कहना चाहूँगी कि मेरी बिग–बुक एक ऐसे पॉवर बैंक का कार्य करती है जिससे मैं हमेशा अपने नन्हें–मुन्ने बच्चों के मन मस्तिष्क को झट से चार्ज कर लेती हूँ और अपने बच्चों को हमेशा खिलखिलाते हुए पाती हूँ।

मीरा कन्नौजिया,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय हरखपुर,
विकास खण्ड–सिकरारा,
ज्नपद–जौनपुर।

English Medium Diary

ENGLISH MEDIUM SCHOOL OF BASIC EDUCATION

Primary School Dhokari Phoolpur Prayagraj enjoys an excellent location in the prime area of Dhokari village, Phoolpur, Prayagraj U.P. The school is functioned as Primary School recognised by Uttar Pradesh Basic Shiksha Parishad. It is one of the oldest government primary school in Dhokari village. English and Hindi both are the medium of communication at PS Dhokari Phoolpur.The school provides quality education and also seeks to maintain standards of health &safety for the well-being of students. The library is well stocked with books to enable the students to enrich & diversify their knowledge. Side by side sports facilities such as Badminton, Cricket, Chess and Carrom helps to identify and develop the full potential of students .Our school building is the main point of attraction for students, local people, and whoever looks or visits it. The Kayakalp theme was designed by me.The Eco-Club formed by me of the school is achieving new heights daily i.e 10 students of our school had participated in National Green Olympiad, 4 students got certificate of distinction in National Green Olympiad2020-21,and rest 6 students got certificate of participation in my guidance. The school comprises three gardens - Herbal Garden, Seasonal Flower Garden and Kitchen Garden. There is also a compost making site for making organic compost from Kitchen waste (i.e vegetable peels, fruit peels etc.).Eco-Club & Gardens in this school was also made /maintained by me. Class comprises projector & print-rich TLMs / charts and learning corner.

Kavita Bhardwaj
Assistant Teacher,
Composite School Dhokari,
Block-Phoolpur, District-Prayagraj.

प्रेरक प्रसंग

कोडांदेरा मदप्पा करिअप्पा

भारतीय सेना को नेतृत्व प्रदान करने की बात आती है तो कोडांदेरा मदप्पा करिअप्पा का नाम सबसे पहले लिया जाता है। वो भारतीय सेना के पहले कमांडर इन चीफ थे। उनको ''किपर'' के नाम से भी पुकारा जाता है। के एम् करिअप्पा का जन्म 28 जनवरी 1899 को कर्नाटक के पूर्ववर्ती कूर्ग में शनिवर्सांथि नामक स्थान पर हुआ था। इस स्थान को अब 'कुडसुग' नाम से जाना जाता है। उनके पिता कोडंडेरा माडिकेरी में एक राजस्व अधिकारी थे। वे अपने परिवार सहित लाइम कॉटेज में रहा करते थे। करिअप्पा के तीन भाई तथा दो बहनें भी थीं। करिअप्पा को घर के सभी लोग प्यार से 'चिम्मा' कहकर पुकारते थे। वैसे तो उनके जीवन से जुड़े अनेक प्रसंग हें लेकिन कुछ प्रसंग बहुत ही प्रेरणादायक हैं।

एक बार एक गाँव से गुजरते हुए करिअप्पा ने देखा कि कुछ पठान औरतें अपने सिर पर पानी से भरे बड़े–बड़े बर्तन ले कर जा रही हैं। पूछताछ के बाद पता चला कि उन्हें रोज चार मील दूर दूसरे गाँव से पानी लेने जाना पड़ता है। करिअप्पा ने तुरंत उनके गाँव में कुआँ खुदवाने का आदेश दिया। पठान उनके इस काम से इतना खुश हुए कि उन्होंने उन्हें ''खलीफा'' कहना शुरू कर दिया। एक और प्रसंग में श्रीनगर से उरी जाते समय ब्रिगेडियर बोगी सेन ने करिअप्पा को सलाह दी कि जीप से झंडे और स्टार प्लेट हटा लिए जाएँ ताकि दुश्मन उनकी जीप को पहचान कर स्नाइपर फायर न कर सकें। मेजर जनरल वी के सिंह बताते हैं कि करिअप्पा ने ये कहते हुए इस सलाह को मानने से इंकार कर दिया कि इसका उनके सैनिकों के मनोबल पर बुरा असर पड़ेगा, जब वो देखेंगे कि उनके कमांडर ने डर की वजह से अपनी जीप से झंडे हटा लिए हैं। बोगी सेन का अंदेशा सही निकला। उनकी जीप पर फायर आया लेकिन सौभाग्य से किसी को चोट नहीं लगी। लौटते समय भी उनकी जीप पर फिर फायर किया गया जिससे उसका एक टायर फट गया, लेकिन करिअप्पा पर इसका कोई असर नहीं हुआ। ''एक बार श्रीनगर में जनरल थिमैया जो उनके साथ दूसरे विश्व युद्ध और कश्मीर में साथ काम कर चुके थे, उनके साथ एक ही कार में बैठकर जा रहे थे। थिमैया ने सिगरेट जलाकर पहला कश ही लिया था कि करिअप्पा ने उन्हें टोका कि सैनिक वाहन में धूम्रपान करना वर्जित है। थोड़ी देर बाद आदतन जनरल थिमैया ने एक और सिगरेट निकाल ली लेकिन फिर करिअप्पा की बात को याद करते हुए वापस पैकेट में रख दिया। करिअप्पा ने इसको नोट किया और ड्राइवर को आदेश दिया कि वो कार रोकें ताकि थिमैया सिगरेट पी सकें।'' फील्ड मार्शल श्री करिअप्पा का पूरा जीवन ही अनुसाशन से पूर्ण और सभी के लिए प्रेरक है।

विनीत कुमार शर्मा
उ0प्रा0वि0 केषोराय, टूण्डला
जनपद–फ़िरोज़ाबाद

बाल कहानी

ईमानदार राधा

आकांक्षा देवी
कक्षा–5
प्राथमिक विद्यालय दिलावलपुर,
विकास खण्ड–देवमई, जनपद–फतेहपुर।

शिक्षण संवाद

एक गाँव था रामपुर जिसमें एक लड़की रहती थी। उसका नाम था राधा। उसके परिवार में उसके माता–पिता और एक छोटा भाई था। उसके भाई का नाम मोहन था। एक बार पास के ही गाँव में मेला लगा। एक दिन राधा के पिता ने कहा तैयार हो जाओ आज हम सब मेला देखने चलेंगे। यह सुनकर राधा बहुत खुश हुई। सब तैयार होकर मेला पहुँचे। उन्होंने मेला घूमना शुरू किया। मेले में उन्होंने बड़े–बड़े झूले देखे। राधा और मोहन दोनों ने घोड़े वाला झूला, झूला। उसके बाद उन्होंने सर्कस भी देखा जिसमें एक जोकर भी था। सर्कस देखने के बाद वे आगे बढ़े। आगे उन्हें एक गुब्बारे वाला दिखाई दिया। राधा ने लाल रंग के और मोहन ने पीले रंग के गुब्बारे खरीदे।

उसके बाद वे खिलौनों की दुकान पर पहुँचे राधा ने एक सुंदर सी गुड़िया खरीदी। उसके छोटे भाई ने दुकान से चुपके से एक गेंद चुरा ली। जब राधा की नजर गेंद पर पड़ी तो उसने अपने भाई को समझाया कि चोरी करना बुरी बात होती है और फिर राधा ने उसे गेंद वापस दुकानदार को लौटाने को कहा। मोहन ने गेंद वापस कर दी। दुकानदार ने राधा की ईमानदारी से प्रसन्न होकर वह गेंद राधा को दे दी। राधा ने वह गेंद मोहन को दे दी अब मोहन भी गेंद पाकर बहुत खुश था। राधा के माता–पिता ने भी राधा की ईमानदारी की प्रशंसा की और उसकी पीठ थपथपाई। उसके बाद वे आगे बढ़े और उन्होंने ठेले पर चाट खायी। घूमते–घूमते शाम हो गई तो राधा और उसका पूरा परिवार घर लौट आया।

"हमार बिटिया हमार मान बेसिक"

शिक्षण संवाद

शिक्षकों द्वारा मिशन शिक्षण संवाद के तहत मिशन शक्ति की परिषदीय मंशा को ध्यान में रखते हुए समाज की एक चिर परिचित मानसिक समस्या लिंग भेद के दृष्टिगत फिल्म का निर्माण हुआ। जिसकी पटकथा के लेखक प्रेम चंद्र तिवारी, निर्माता व निर्देशक शिवम सिंह हैं। भारत वर्ष गाँवों का देश है और इसी को ध्यान में रखते हुए एक गरीब, अभावग्रस्त बच्ची दिव्या के शिक्षा से दूर रहने के कारणों को लेकर फिल्म का निर्माण हुआ। आज भी गरीब वर्ग धन के अभाव में अधिक फीस के कारण प्राइवेट स्कूलों में बेटों को तो पढ़ा लेने की ख्वाहिश रखता है जो कि असंभव होते हुए भी करता है परंतु अपनी बेटियों के लिए सोचता तक नहीं और वे परिषदीय विद्यालयों में नामांकित कर ली जाती हैं।

आज जबकि परिषदीय विद्यालयों में मिशन कायाकल्प के तहत सौंदर्य पर ध्यान दिया गया है। सारी सुविधाएँ विद्यालयों को मिली हैं स्वच्छ पानी, शौचालय, पुस्तकें, बैग, ड्रेस, भोजन, जूते और साथ–साथ योग्य अध्यापक जो बच्चों के भविष्य को लेकर चिंतित भी हैं।

फिल्म दिव्या के पिता के शराबी होने से लेकर माँ के शिक्षित होने तक की कहानी से

ओत– प्रोत है। दादी यदि बच्चियों को पढ़ने से मना करती हैं और घर के काम को प्रश्रय देती हैं तो वहीं दिव्या की माँ पढ़ाई की महत्ता जानती है। वीरा भट्ठे पर कार्य करता है। लापरवाही करता है इसीलिए उस पर मार भी पड़ती है। भट्ठा मालिक अधिक पैसे अपनी दुश्चरित्रता के कारण देता रहता है। जब वीरा मालिक की अभद्र भाषा का विरोध करता है तो चन्गू –मंगू मार–पीट करते हैं। वह बेटी की सहायता से पहुँचता है जहाँ डॉक्टर पूछते और समझाते हैं कि यही बेटी है जिसे तुम गर्भ में ही नष्ट करना चाहते थे।

संयोगवश वीरा के घास– फूस के घर में आग लग जाती है और उसमें प्रधान सहित भट्ठा मालिक, गाँव के लोग उसका साथ देते हैं और वह शराब न पीने की कसम को फिर दुहराता है और बेटी को हर संकट सहकर पढ़ाने का संकल्प लेता है। दिव्या को पढ़ने जाने के लिए नदी भी पार करनी पड़ती है जहाँ वहाँ का नाविक भी जीवन की गहनता को गीत के माध्यम से समझाता है। नाविक के द्वारा जीवन के उतार–चढ़ाव को समझाने का प्रयास होता है।

विद्यालयों में संसाधनों को एक अधिकारी के द्वारा निरीक्षण करते हुए दिखाने का प्रयास हुआ है जिसमें बच्चों की क्षमता की भी व अध्यापन कार्यशैली की भी झलक दिखाई गयी है।

दिव्या अपने प्रिय गुरु जी के माध्यम से ऑन लाइन काव्य सम्मेलन – परवाज में भाग लेती है। स्वरचित् कविता के माध्यम से वह मिशन संवाद के उद्देश्य पूर्ण करते हुए परिषदीय मानकों को सिद्ध भी करती है। दिव्या को ''परवाज'' की तरफ से सम्मान पत्र मिलता है। बेसिक शिक्षा परिषद के अधिकारी के द्वारा अपनी कुर्सी पर बैठाकर सम्मानित किया जाता है। गाँव का मान एक बेटी के द्वारा बढ़ाया जाता है ये जानकर

गाँव के सेक्रेटरी, गणमान्य लोग गाजे– बाजे के साथ फूलों की वर्षा, माला पहनाकर दिव्या, निशी, का स्वागत करते हैं।

फिल्म में सभी अभिनेता, अभिनेत्रियाँ परिषदीय शिक्षक– शिक्षिकाएँ हैं। परिषदीय बच्चे व उनके अभिभावक हैं। एस एम सी अध्यक्ष हैं तो वास्तविक प्रधान का भी सहयोग मिला है। सभी ने मन से काम किया इसीलिए यह फिल्म शून्य बजट रही जोकि भारत की फिल्म इंडस्ट्री के लिए आश्चर्यजनक सिद्ध हुई है। शिक्षकों ने इस सामाजिक कर्तव्य को भी बखूबी निभाकर सिद्ध कर दिया है कि शिक्षक ही राष्ट्र निर्माता होते हैं। इस फिल्म को समाज का, उच्च अधिकारियों का अपेक्षा से अधिक आशीर्वाद प्राप्त है। यह फिल्म लिंग भेद पर अपना संदेश देने में पूर्णतः सफल है।

यह फिल्म आप Youtube पर देख सकते हैं–

Https://youtu-be/sMW9vgspt6s

साभार:
प्रेम चन्द्र तिवारी
सिकरारा, जौनपुर।

खेल विशेष

गोल्फ

शिक्षण संवाद

संक्षिप्त विवरण

सफेद गेंद और क्लब से खेला जाने वाला एक व्यक्तिगत खेल है। गोल्फ के मैदान में जगह–जगह कई गड्ढे बने होते हैं, जिन्हें होल कहा जाता है और उनके अलग–अलग अंक होते हैं। खिलाड़ियों को तरह–तरह के क्लबों का प्रयोग करते हुए इन गड्ढों में गेंद डालकर अंक प्राप्त करने होते हैं। गेंद को लकड़ी या धातु कि बनी एक छडी से हिट किया जाता है जिसे क्लब कहा जाता है। गोल्फ खेलने का मैदान काफी लंबा–चौड़ा और समस्त मैदान हरी–हरी घास से भरा होता है। यह मैदान गोल्फ कोर्स कहलाता है। सामान्यतः एक गोल्फ कोर्स में 18 होल होते हैं जिसमें प्रत्येक होल की गोलाई 4.25 इंच एवं गहराई 4 इंच होती है।

गोल्फ में प्रयुक्त प्रमुख उपकरण एवं इनसे सम्बंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ

क्लब एक तरह की मजबूत एवं विभिन्न प्रकार के धातु (जैसे स्टील/ग्रेफाइट आदि) एवं लकड़ी से बनी एक छड़ होती है। क्लब के एक सिरे को सिप तथा दूसरे को क्लब हेड (गोल नुमे आकार) कहते हैं। ग्रिप और क्लब हेड के बीच के हिस्से को शाफ्ट कहते हैं जिसकी गोलाई 0.5 इंच लम्बाई 34 से 48 इंच एवं वजन 45 से 150 ग्राम के बीच होता है जो शाफ्ट के मेटेरियल पर निर्भर करता है।

लईः– मैदान की जमीन एवं क्लब शाफ्ट कि मध्य रेखा के बीच के एंगल को लाई कहते हैं। लॉफ्टः– काल्पनिक लंबवत रेखा एवं क्लब सतह के बीच के एंगल को लॉफ्ट कहते हैं।

गोल्फ के खेल में प्रयुक्त होने वाली सफेद गेंद का गोल आकार कम से कम 1.680 इंच का एवं वजन 45.93 ग्राम का होता है। यह गेंद क्रमशः 2. 3 व 5 टुकड़ों से मिलकर बनी होती है जिसके गोल्फ के खेल में अलग–अलग उपयोग होते हैं। गेंद मुख्यतः गुडा पर्वा नाम की ठोस रबड़ की बनी होती है जो कि 80, 90 व 100 नंबर में संकुचित कर विभिन्न प्रकार कि ठोस अवस्थाओं में तैयार की जाती है। गेंद की बाहरी सतह बलाटा रबड या सुरलीन नामक रेजिन से तैयार की जाती है।

गोल्फ का इतिहास

मॉडर्न गोल्फ खेल की शुरुआत 15 वीं शताब्दी में स्कॉटलैंड में हुई थी जिसको जेम्स के द्वारा 1457 में प्रतिबंधित कर दिया गया था और फिर इस प्रतिबन्ध को 1502 में उसी के द्वारा हटा दिया गया जब उसने खुद गोल्फ खेल शुरू कर दिया था। सन 1764 में सेंट एण्ड्स में पहले 18 छेद वाले गोल्फ कोर्स (गोल्फ खेलने के मैदान) को बनाया गया जिसे बाद में 22 छेद वाले गोल्फ कोर्स में रूपांतरित कर दिया गया था। पॉमस मिशेल मोरिस जिनका जन्म 16 जून 1821 में सेंट एण्ड्स (स्कॉटलैंड) में हुआ था को गोल्फ के खेल का जनक माना जाता है। इनकी मृत्यु 24 मई 1908 को हुई थी।

भारत में गोल्फ की शुरुआत 19वीं शताब्दी में हुई। ग्रेट ब्रिटेन के बाद भारत पहला देश है जिसने गोल्फ का भारतीय इतिहास गोल्फ को एक खेल के रूप में स्वीकार किया। सन 1829 में भारत में पहला गोल्फ कोर्स (रॉयल कलकत्ता गोल्फ क्लब) की स्थापना हुई जो की ग्रेट ब्रिटेन के बाद विश्व का सबसे पुराना गोल्फ कोर्स हैं। जीव मिल्खा सिंह, अनिरचन लाहिरी, ज्योति रंधावा, अर्जुन अटवाल भारत के सुप्रसिद्ध गोल्फर हैं। इन सभी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई सारी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हासिल की हैं। श्रीनगर में स्थित गुलमार्ग गोल्फ कोर्स भारत का सबसे बड़ा गोल्फ कोर्स है जोकि 7505 याईस में १८ होल वाला गोल्फ कोर्स है।

गोल्फ खेल के कुछ महत्वपूर्ण नियम

एक खिलाड़ी अपने गोल्फ बैग में खेल प्रतियोगिता के दौरान अधिकतम 14 क्लब्स को रख / इस्तेमाल कर सकता है। गोल्फ का खिलाड़ी खेल के दौरान अपने पार्टनर (केडडी) के अलावा किसी और से सलाह / मशवरा नहीं ले सकता।

गेंद को क्लब की सहायता से एक–एक करके सभी होल्स में डालकर खिलाड़ियों को अंक अर्जित करने पड़ते हैं और अंत में उस होल को टारगेट करना पड़ता है जिसके

पास एक झंडा लगा होता है।

खेल के प्रारम्भ में खिलाड़ियों को अपने प्रारम्भिक बिंदु से दूरस्थ स्थित होल में, कम से कम स्ट्रोक में गेंद डालनी होती है। जो खिलाड़ी कम से कम स्ट्रोक्स में यह टास्क पूरा करता है उसे अगले होल के खेलने के लिए पहले मौका दिया जाता है। खेल के दौरान, गेंद के खो जाने की दशा में वाटर हजार्ड में गेंद गिर जाने पर तथा एक सुनिश्चित होल की दूरी से अधिक दूरी पर गेंद चली जाने पर खिलाड़ी पर पेनल्टी लगती है। गेंद को ढूँढने के लिए पाँच मिनट का समय मिलता है। यदि गेंद पूणतया खो जाती है तो खिलाड़ी को एक स्ट्रोक कम खेलने की पेनल्टी तथा वाटर हजार्ड में गेंद के गिर जाने और अधिक दूरी पर गेंद चली जाने पर खिलाड़ी को फिर से अपने प्रारम्भिक बिंदु से खेल दुबारा खेलना पड़ता है। जिस स्थिति में मिलती है उसे ठीक वैसे ही अवस्था में खेलना पड़ता है गेंद को न ही हटा सकते हैं और न ही उसके सामने की किसी चीज तो तोड़ मोड़ सकते हैं।

गोल्फ खेल से सम्बंधित ट्रॉफियाँ

बाकर कप, राइडर कप, भरतराम कप, सिरकिट कप, कनाडा कप, जान हॉपकिस कप यह सभी गोल्फ खेल से सम्बंधित ट्रॉफीज हैं।

कुछ अन्य रोचक जानकारियाँ

गोल्फ सामान्यता अकेले ही खेला जाता है परन्तु किसी बड़े टूर्नामेंट में 80 से 150 खिलाड़ियों तक 3 से 4 समूहों में आपस में प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। पूरे विश्व में संयुक्त राज्य अमेरिका ही एक अकेला देश है जिसने गोल्फ के अब तक के इतिहास में सर्वाधिक वरीयताएँ प्राप्त की हैं। सन २०२० के विश्व गोल्फ विजेता भी अमेरिकी गोल्फर पेट्रिक रीड है। टी बॉक्स को मिलाकर हर एक गोल्फ कोर्स में निम्न 5 बुनियादी पार्ट होते हैं–

फेयरवेरू टी बॉक्स और ग्रीन के बीच में मौजूद कटा या ट्रिम किया गया जगह को फेयरवे कहते हैं।

रफः फेयरवे के बॉर्डर पर मौजूद कम घास वाले जगह को रफ कहते हैं। पुटिंग ग्रीनः पुटिंग सीन या ग्रीन के नजदीक फेयरने का हर छेद मौजूद होता है।

हजार्डः इसे ट्रैप कहते हैं, इसे जानबूझकर गोल्फ कोर्स में रखा या बनाया जाता है ताकि गेंद को छेद तक पहुँचने में कठिनाई आये। सैंड ट्रैप या पानी का जमाव सामान्य हजार्ड होता है।

योग–विशेष

योग का चुनाव - सुखमय जीवन का आधार

शिक्षण संवाद

योग अर्थात् जुड़ना। जीव के तन, मन, मस्तिष्क का प्रकृति से जुड़ाव ही योग है। सर्वोत्तम योगी (योगीराज भगवान श्री कृष्ण) ने श्रीमद्भागवत में बताया है योगः कर्मसु कौशलम' अर्थात् कर्मों में कुशलता ही योग है।

एक समय था, जब जीव प्रकृति के बनाए हुए नियम से जुड़ कर्म किया करता था। दिनचर्या में अनुशासन होने से जीव तन मन मस्तिष्क के साथ पूर्ण रूप से स्वस्थ रहते थे। आमतौर पर योग की विस्तृत चर्चा नहीं होती थी। उस समय बड़े–बड़े साधक प्रकृति में छुपे रहस्यों (जिनमें आत्मा परमात्मा के गूढ़ रहस्य भी) को जानने के लिए योग किया करते थे। जीव जबसे दिनचर्या अनुशासन एवम् प्रकृति विरुद्ध हो गया है अर्थात् मानव के द्वारा किए कर्म, प्रकृति के द्वारा बनाई गई दिनचर्या के विपरीत हो गए हैं। इस कारण प्रकृति से सामंजस्य स्थापित न होने के कारण अधिकांश जनसंख्या शारीरिक व मानसिक परेशानियों का सामना कर रही है। इन परेशानियों से समय रहते दूरी बनाने हेतु कई वर्षो से योग का नाम अत्यधिक प्रचलन में आया है।

जैसा कि हम जानते है कि अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 से प्रारंभ हुआ और प्रतिवर्ष 21 जून, जो वर्ष का सबसे बड़ा दिन होता है को मनाया जाता है। योग में राज योग, कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग प्रमुख प्रकार हैं। प्रत्येक, योग में ''कर्म योग'' को करता है। कर्म योग ही सेवा का मार्ग जिसके अंतर्गत, जिसको आज हम अनुभव करते हैं वह हमारे कार्यों से भूतकाल में बदलता जाता है। इसके साथ ही वर्तमान में सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ अच्छा भविष्य बनाया जा सकता हैं।

यह सब जानकारी होने पर अधिकांश परिवार के जन योग से जुड़ उसका अनुसरण कर रहे हैं। हम सबको इस बात को भी ध्यान में रखना होगा, योग का अनुसरण करने से पूर्व अवश्य जान लें कि हमारे आयु वर्ग, शरीर की क्षमता, समय और उद्देश्यों को सम्मिलित करते हुए कौन कौन से योग शरीर के लिए आवश्यक हैं। अधिकांश लोग योग का अनुसरण कर रहे हैं लेकिन भेड़ चाल में इससे हमें बचना होगा।

हर योग के पीछे उसका उद्देश्य निहित होता है। अतः सजग रूप में हमें योग करने से पहले उद्देश्यों की जाँच अति आवश्यक है। प्रत्येक की आवश्यकता भिन्न भिन्न है। योग एक औषधि की तरह है, सही मात्रा और सही समय। कुशल योग प्रशिक्षक की सलाह के अनुसार योग का सुंदर चुनाव सभी के लिए सकारात्मक दिशा प्रदान करेगा। सही गति के साथ तन मन मस्तिष्क का चलते रहना ही सुखमय जीवन का आधार है।

दिनचर्या में कुछ आवश्यक योग जिनको हम आसानी से कर सकते हैं। प्रातः उठने पर हस्त को नमन, जैसा कि श्लोक में बताया गया है:– कराग्रे वसते लक्ष्मीः, करमध्ये सरस्वती, करमूले तु गोविंदरू, प्रभाते करदर्शनम् । इसके साथ में हस्त से धरा को नमन, योग का प्रारंभ है। जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

योग में सर्वश्रेष्ठ सूर्य नमस्कार जिसके अंतर्गत 12 आसन बताए गए हैं जो खाली पेट ही करने होते है। इनमें से कुछ आसन प्रत्येक आयु वर्ग के सभी जन आसानी से कर सकते हैं जिसमें प्रथम आसन सूर्य के सम्मुख नमस्कार की मुद्रा आँखें बंद, ध्यान लगाकर 'सूर्य देव' का आह्वान ''मित्राय नमः'' मंत्र के द्वारा कर सकते हैं।

दूसरे आसन से ग्यारह आसन तक, स्वस्थ शरीर के आधार पर कर सकते हैं। बारहवाँ आसन लगभग पहले के समान है।

अनुलोम–विलोम प्राणायाम जिसको करने से पहले श्वांस संबंधित रोगी अपने–अपने स्तर को जान यह क्रिया कर सकते हैं। इसके साथ ही भरपूर लाभ लेने के लिए साधक को उस जगह का चुनाव करना बहुत आवश्यक है जहाँ ऑक्सीजन की प्रचुर मात्रा मौजूद हो।

हँसना जन के भावनाओं की अभिव्यक्ति की एक प्रक्रिया है। योग के आधार पर, हँसना सकारात्मक और शक्तिशाली भावना जिसके अंदर मनुष्य को ऊर्जावान बनाने के सभी गुण मौजूद रहते हैं। खुलकर हँसना सारे योगों का निचोड़ है।

दिनचर्या में शारीरिक और मानसिक थकान को दूर करने के लिए ''ऊँ'' का जाप कर, तन मन मस्तिष्क को पुनः पुनः ताजा किया जा सकता है। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेत्।

ऋषि कुमार दीक्षित,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भटियार,
विकास क्षेत्र – निधौली कलां, जनपद–एटा।

Read Along App

शिक्षण संवाद

आज का समय तकनीक का समय है। शिक्षा के जगत में नई – नई तकनीकों को प्रयोग में लाया जा रहा है। कोविड–19 के समय में इन तकनीकों का महत्व और भी बढ़ गया है। बच्चों को घर बैठे–बैठे कई तकनीकों के द्वारा पढ़ाया जा रहा है ताकि उनकी पढ़ाई का नुकसान न हो। इसी क्रम में मैं आज रीड एलांग (Read Along) एप्प के बारे में बताने जा रही हूँ। इसे पहले बोलो एप्प(Bolo App) के नाम से जानते थे परंतु अब यह रीड एलांग के नाम से जाना जाता है। यह एक रीडिंग ट्यूटर एप्प है।

इस एप्प के माध्यम से बच्चे अलग–अलग भाषाओं में कहानियाँ, किताबें पढ़ सकते हैं। यह मुख्य रूप से 5 वर्ष व इससे बड़ी उम्र के बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए बनाया गया है। इसमें बहुत सारी कहानियाँ और गेम्स उपलब्ध हैं जिससे बच्चे खेल–खेल में हिंदी व अंग्रेजी सीख सकते हैं। इसमें एक कंप्यूटराइज ट्यूटर भी है। जो जरूरत पड़ने पर बच्चों की सहायता करती है और बच्चों को सही जवाब देने पर उत्साहवर्धन भी करती है। बच्चों को सितारे मिलते हैं और वह आगे पढ़ने के लिए उत्साहित होते हैं। इसे हम प्ले स्टोर की सहायता से डाउनलोड कर सकते हैं। और अपनी पसंद की भाषा चुन सकते हैं। उसके बाद अलग–अलग कहानियाँ पढ़ सकते हैं। इसमें एक खास बात यह है कि यह ऑफलाइन भी कार्य करता है। एक मोबाइल में एक से अधिक बच्चे भी पढ़ाई कर सकते हैं।

मुझे यह एप्प बहुत अच्छा लगता है और मैंने अपने विद्यालय में भी इसका प्रयोग बहुत अच्छे तरीके से किया है। सभी बच्चे इसमें प्रतिभाग करते हैं और अधिक से अधिक सितारे कमाने के लिए कहानियों को पढ़ते हैं। बहुत से बच्चों ने अपने घर पर भी अपने अभिभावकों के मोबाइल में यह एप्प डाउनलोड किया है और वे घर जाकर इसे प्रयोग में लाते हैं और अपना ज्ञानवर्धन करते हैं ।

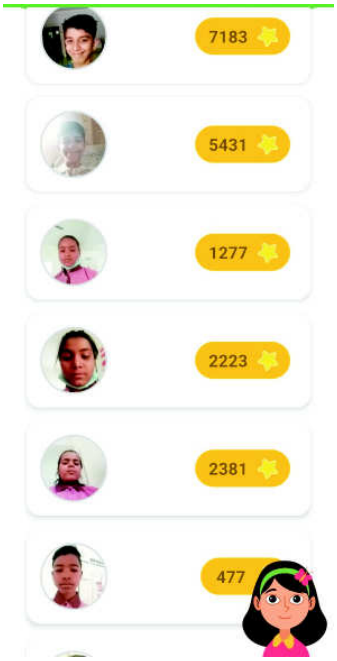

मीना भाटिया,
सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय डाढ़ा,
विकास खण्ड–दनकौर,
जनपद–गौतमबुद्धनगर।

लाला लाजपत राय

शिक्षण संवाद

लाला लाजपत राय का जन्म पंजाब के फिरोजपुर जिले के ढोडिके नामक स्थान में 28 जनवरी, 1865 ईस्वी में में हुआ था। उनके पिता राधाकिशन आजाद स्कूल के अध्यापक थे और माता गुलाबी देवी थी। लाला लाजपत राय अपने पिता को अपना गुरु स्वीकार करते थे। उनका कहना था कि मुझे भारत में उनसे अच्छा अध्यापक नहीं मिला। वह पढ़ाते नहीं थे बल्कि छात्रों को स्वयं सीखने में सहायता करते थे।

लाला लाजपत राय के कुछ सद्विचार अधोलिखित हैं:–

दूसरों पर विश्वास न रखकर स्वयं पर विश्वास रखो। आप अपने ही प्रयत्नों से सफल हो सकते हैं क्योंकि राष्ट्रों का निर्माण अपने ही बलबूते पर होता है।

नेता वह है जिसका नेतृत्व प्रभावशाली हो, जो अपने अनुयायियों से सदैव आगे रहता हो, जो साहसी और निर्भीक हो।

वास्तविक मुक्ति दु:खों से, निर्धनता से, बीमारी से, हर प्रकार की अज्ञानता से और दासता से स्वतंत्रता प्राप्त करने में निहित है।

पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ शांतिपूर्ण साधनों से उद्देश्य पूरा करने के प्रयास को ही अहिंसा कहते हैं।

सार्वजनिक जीवन में अनुशासन को बनाए रखना बहुत ही जरूरी है, वरना प्रगति के मार्ग में बाधा खड़ी हो जाएगी।

देशभक्ति का निर्माण न्याय और सत्य की दृढ़ चट्टान पर ही किया जा सकता है।

इंसान को सत्य की उपासना करते हुए सांसारिक लाभ पाने की चिंता किए बिना साहसी और ईमानदार होना चाहिए।

वह समाज कदापि नहीं टिक सकता जो आज की प्रतियोगिता और शिक्षा के समय में अपने सदस्यों को प्रगति का पूरा–पूरा अवसर प्रदान नहीं करता है।

अस्पृश्यता पूर्णरूपेण अमानवीय और जंगली संस्था है। जो हिन्दू धर्म और हिन्दुओं के सर्वथा

अयोग्य है। हिन्दू–शास्त्रों में कहीं भी अस्पृश्यता नहीं मिलती।
एक निर्गुण, निराकर, न्यायकर्ता, दयालु और सर्वबुद्धिमान ईश्वर की बात की जाती है, पर आज प्राप्त होने वाली शिक्षा यह सिखाती है कि स्वर्ण और सम्पदा ही ईश्वर है जिसकी आराधना, उपासना और इच्छा की जानी चाहिए।
कष्ट उठाना तो हमारी जाति का लक्षण है पर मनोवैज्ञानिक क्षण में और सत्य की खातिर कष्टों से बचना कायरता है।
जीवन वास्तविक है, मूल्यवान है, कर्मण्य है और अमूल्य है। इसका आदर हो, इसे दीर्घ बनाये रखना चाहिए और इससे आनंद उठाना चाहिए।
एक हिन्दू के लिये नारी लक्ष्मी, सरस्वती और शक्ति का मिला –जुला रूप होती है अर्थात वह उस सबका आधार है, जो सुन्दर, वांछनीय और शक्ति की ओर उन्मुखकारक है।
मोहम्मद अली जिन्ना ने लाला लाजपत राय के लिए कहा था कि ''वह भारत माता के महान पुत्रों में से एक हैं''। वास्तव में उनका त्याग और बलिदान देशवासियों के लिए चिरस्मरणीय रहेगा।

मिहिर यादव,
सहायक अध्यापक(विज्ञान),
कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय पाण्डेयपुर,
विकास खण्ड–मुंगराबादशाहपुर,
जनपद–जौनपुर।

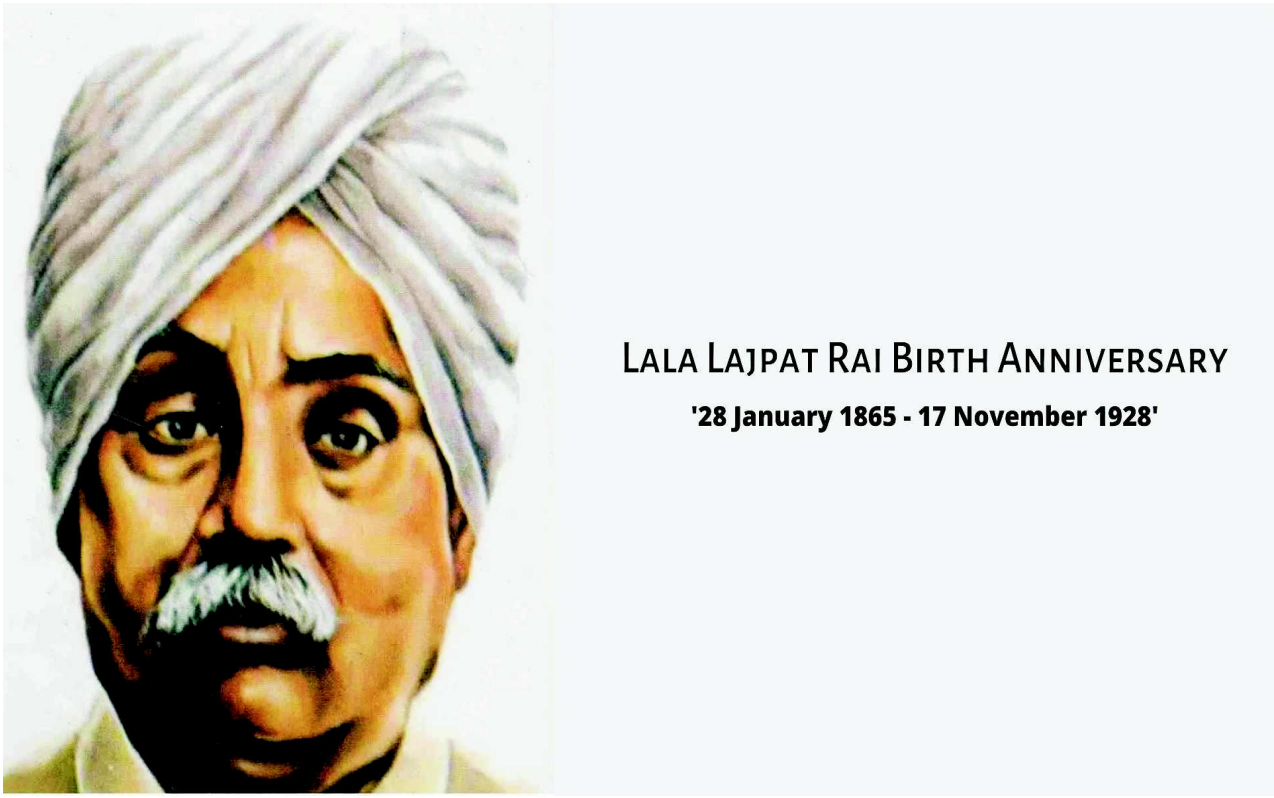

नवाचार

शैक्षिक संकलन केन्द्र

कोविड–19 के समय में बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो इसके लिए मेरे द्वारा विद्यालय के सभी शिक्षकों के सहयोग से प्राथमिक विद्यालय टेवां प्रथम के बच्चों के लिए किया गया एक प्रयास– 'शैक्षिक संकलन केंद्र नवाचार कोविड –19 के समय में बच्चों की पढ़ाई बाधित होने से बचाने के लिए मेरे द्वारा यह नवाचार विद्यालय के प्रधानाध्यापक एवं शिक्षकों के साथ विचार –विमर्श एवं सबके सहयोग से शुरू किया गया है।

जिन बच्चों के पास एंड्राइड फोन नहीं है या जिनके मोबाईल में डाटा नहीं है उनके लिए यह नवाचार बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगा। ऐसी विचारधारा को मन मे रखकर कोविड–19 से सुरक्षा का ध्यान रखते हुए सोशल डिस्टेसिंग का पालन करते हुए मास्क एवं सेनिटाइजर का प्रयोग करते हुए यह नवाचार प्राथमिक विद्यालय टेवां प्रथम के द्वारा किया जा रहा है।

इस नवाचार की क्रियाविधि इस प्रकार है।

1– प्रत्येक 10–32 बच्चों की संख्या वाले मोहल्ले में एक संकलन केंद्र बनाया गया है।

2–संकलन केंद्र किसी अभिभावक के घर को बनाया गया है।

3–संकलन केंद्र पर बच्चे अपनी कॉपी मास्क लगाकर जमा करेंगे।

4– सुबह 10 बजे तक हर संकलन केंद्र पर कॉपियाँ जमा हो सकेंगी।

5–जमा हुई कॉपियों को संकलन केंद्र के नामित अभिभावक विद्यालय में आकर मास्क का प्रयोग करते हुए कॉपियों को विद्यालय में जमा करेंगे। यदि अभिभावक नहीं आ पाएँगे तो स्वयं शिक्षक जाकर कॉपियों को संकलन केंद्र से मास्क लगाकर कॉपियों को लायेंगे।

6–कॉपियों को संकलन केन्द्र से सम्बंधित शिक्षक जाँचकर एवं गृहकार्य देकर पुनः कॉपियों को संकलन केन्द्र तक भेजेंगे या पुनः शाम 2:30 बजे संकलन केन्द्र के नामित अभिभावक मास्क लगाकर आकर कॉपियों को ले जाएँगे।

7– बच्चों को प्रतिदिन गृहकार्य दिया जाएगा।
8– संकलन केंद्र पर जो बच्चे मास्क लगाकर आयेंगे उन्ही की कॉपियों को जमा किया जाएगा और जाँचकर गृहकार्य देकर कॉपियों को वापस किया जाएगा।
9–संकलन केन्द्र का औचक निरीक्षण मेरे द्वारा और विद्यालय के शिक्षकों द्वारा किया जाएगा।
10–संकलन केंद्र से आने वाली कॉपियों को जाँचने के बाद स्वयं के हाथों को शिक्षक सेनिटाइजर द्वारा अवश्य सेनिटाइज करेंगे।
''Something is better than Nothing'' की तर्ज पर मेरे द्वारा विद्यालय के सभी शिक्षकों के सहयोग से यह प्रयास किया गया है।

अजय कुमार श्रीवास्तव,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय टेवां प्रथम,
विकास खण्ड–मंझनपुर,
जनपद–कौशाम्बी।

गतिविधि

फिंगर पपेट सबको भाये, मिशन शक्ति के उददेश्य बताए।

शिक्षण संवाद

वर्तमान समय में बाल केंद्रित शिक्षा के आधार पर बच्चों को गतिविधि के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना अधिक उपयोगी सिद्ध हो रहा है। रोचक गतिविधि को अपनाकर विषय वस्तु को समझाना अधिक आसान और अधिक स्थाई ज्ञान प्रदान करने वाला होता है। इसी आधार पर फिंगर पपेट के माध्यम से छात्राओं को मिशन शक्ति अभियान के उद्देश्य और हेल्पलाइन नंबर को अधिक स्थाई रूप से व्यावहारिक रूप प्रदान करने के लिए इस रोचक गतिविधि को अपनाया। जिसमें सभी छात्राओं ने बड़े उत्साह और असीम ऊर्जा के साथ प्रतिभाग किया।

सर्वप्रथम हमने मिशन शक्ति को समझाने हेतु विभिन्न पात्रों के रूप में जैसे–शिक्षिका छात्र और हेल्पलाइन नंबर को एक पात्र के रूप में उनको आकार देकर फिंगर पपेट बनाया। फिर छात्राओं के स्वभाव और उनकी स्वेच्छा को देखते हुए फिंगर पपेट को उँगली में पहना करके एक रोल प्ले करवाया जिसमें एक छात्रा ने शिक्षिका के रूप में और कई छात्राओं ने विद्यार्थी के रूप में और अन्य छात्राओं ने महिला हेल्पलाइन नंबर चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर आदि–आदि के रूप में रोल प्ले किया। स्वयं छात्राओं ने भी हेल्पलाइन नंबर के बारे में अच्छी जानकारी प्राप्त की और साथ में अन्य छात्राओं ने भी बड़े ही सरल एवं रोचक ढंग से इन नंबरों के बारे में और इनकी उपयोगिता के बारे में जानकारी हासिल की।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली(1–8),
विकास खण्ड– अमौली,
जनपद– फतेहपुर।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद